(5.) बछड़े में एसिडोसिस होने से बचाएँ। आमतौर पर बछड़े में हल्की उपापचय और श्वसन ऐसीडोसिस होती है। लेकिन अगर बछड़ा जन्म के दौरान फस जाए और खींच कर निकाला जाए तो ज्यादा ऐसीडोसिस हो जाती है। इसके लक्षण है:–जैसे पेट से सांस लेना, हृदय गति कम होना, ढीलीमांसपेशियाँ, बछड़े का पैरों को न हिला पाना, बछड़े का बैठने में 15 मिनट से ज्यादा समय लेना। अगर खुद से ठीक न होतो डॉक्टरी ईलाज जरूरी है। पशु चिकित्सक से संपर्क करें।

(6.) बछड़े को रोज उसके शारीरिक भार से दस प्रतिशत (10%) दूध पिलाना है। मगर 5–6 लीटर से अधिक दूध दिन में नहीं पिलाएँ, वरना दस्त लगने का खतरा रहता है।

(7.) शरीर के सभी प्राकृतिक छिद्रों जैसे नाक, मुँह, कान, गुदा, योनी इत्यादि का अच्छे से निरीक्षण करें।

(8.) अगर बछड़े ने पहला गोबर ना किया हो तो पेट में दर्द या भूख ना लगना जैसे लक्षण दिखाई देंगे। गोबर करवाने के लिए साबुन वाले पानी या नार्मल सेलाइन से गुदवस्ति करें या बछड़े को गलिस्टिन या अरंडी का तेल पिलाएँ, जिससे आंते नर्म रहती है।

(9.) बछड़ो में दस्त, नाभि/जोड़ों की बीमारी (संक्रमण), डिप्थीरिया, निमोनिया जैसी बीमारियों से बचाव करें। किसी भी तरह के संक्रमण से बचाएँ। अगर संक्रमण हो जाए तो डॉक्टर से सलाह करें।

(10.) जन्म के 15 दिनों के भीतर ही सींगों का विघटन करवाएँ। देरी करने पर यह प्रक्रिया मुश्किल व दर्दनाक होती है और जख्म के संक्रमण का खतरा रहता है। यह प्रक्रिया बछड़ों के अच्छे प्रबंधन के लिए अति आवश्यक है।

आलेख एवं प्रस्तुतिकरण:- भावना, राजेश कुमार, अर्चना कुमारी एवं विपिन कुमार
सहायक प्राध्यापक, पैथोलॉजी विभाग, बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-
प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय परिसर पटना-14
Email: deebasupatna@gmail.com (Official), dee-basu-bih@gov.in
Mob.: +91 94306 02962,+91 80847 79374

RE: 805191078I/ March 2022

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
BIHAR ANIMAL SCIENCES UNIVERSITY

प्रसार पुस्तिका संख्या:- DEE/2022-39

नवजात बछड़े की देखभाल एवं नाभि संक्रमण से बचाव के उपाय

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय,पटना-14

नवजात बछड़े की देखभाल एवं प्रबंधन

बछड़े की जन्म के दौरान एवं बाद में देखभाल उसके स्वास्थ्य के लिए अति आवश्यक है। यदि जन्म के दौरान ध्यान ना दिया जाए तो बछड़े की तुरंत मौत हो सकती है। जन्म के कुछ दिनों बाद तक विशेष ध्यान देना भी आवश्यक है, क्योंकि बछड़ें में बीमारियों से लड़ने की शक्ति कम होती है और यदि शुरू के जीवन काल में ही कोई संक्रमण या बीमारी होने से बछड़े की मौत होने का खतरा बना रहता है।

बछड़े की देखभाल के लिए निम्नलिखित आवश्यक बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए:–

(1.) जन्म के तुरंत बाद बछड़ें में सांस का चलना आवश्यक है। इसके लिए किसी साफ कपड़े की मदद से बछड़े की नांक से बलगम या झिल्ली निकाले। नवजात बछड़े को पिछले पैरों से हवा में उठाएं और आगे पीछे झुलाएँ ताकि गले और नांक से प्रचुर मात्रा में तरल पदार्थ या झिल्ली निकल जाए। अगर सांस चलना शुरू ना हो तो बछड़े की छाती को मलें। बछड़े को गाय के साथ रखें ताकि गाय उसे चाट सके। किसी साफ कपड़े की मदद से बछड़े को साफ करें और सुखाएं। पहली बार बछड़ा जन्मने वाली गाय कभी–कभी बछड़े को मारने की कोशिश करती है, ऐसी गाय से बछड़े की सुरक्षा करें।

(2.) बछड़े को जन्म के आधे से दो घंटे के भीतर गाय (माँ) का पहला दूध (कोलेस्ट्रम) पिलाना अति आवश्यक है। इसमें सामान्य दूध के मुकाबले दो से तीन गुणा खनिज तथा पाँच गुणा प्रोटीन होते हैं जिससे नवजात को शारीरिक ताकत मिलती है और यह बीमारियों से लड़ने की शक्ति भी प्रदान करता है।इसमेंलैक्टोस की मात्रा कम होती है जिससे बछड़े में दस्त लगने की संभावना कम हो जाती है।

(3.) गर्भनाल (नाड़ू) संकमण

नवजात पशुओं के नाभी के संक्रमण को नेवल इल कहते हैं।

गर्भपात संकमण के लक्षण:–

1.नवजात पशुओं के नाभी के आस–पास सूजन
2.नाभी में पस का बनना
3.मक्खियों के बैठने के कारण, कीड़े लगना
4.तेज बुखार
5.खाना–पीना कम करना
6.समय पर इलाज नहीं होने पर जोड़ो का संक्रमित होना
7.पशु को चलने में कठिनाई होना

उपचार:–

1.पशु चिकित्सक के सलाह पर मवाद को बाहर निकालकर नियमित नाभी और जोड़ों का ड्रेसिंग करें।
2.संक्रमण को रोकने के लिए 3–5 दिन। Antibiotic का प्रयोग करे।

बचाव के उपाय:–

- नाभि नाल को नई ब्लेड से शरीर से 2–3 इंच नीचे काटें।
- कटे हुए भाग पर एन्टीसेप्टिक मलहम लगाएं ताकि संक्रमण न हो।
- नवजात पशुओं को साफ–सुथरी जगह पर रखें।
- नवजात पशुओं को उचित एवं पर्याप्त मात्रा में खींस याने Colostrum पिलाएं।

(4.) नवजात बछड़े में शरीर का तापमान का अनुरक्षण करना भी अतिआवश्यक है। जन्म के तुरंत बाद बछड़े के शरीर का तापमान कम हो जाता है और कुछ ही घंटों के भीतर सामान्य हो जाता है। तापमान को सामान्य बनाए रखने के लिए जन्म के तुरंत बाद शरीर का मैटाबोलिक दर भ्रूण अवस्था दर से 2–3 गुना बढ़ जाता है और शरीर की गर्मी को बचाए रखता है, क्योंकि बछड़े में ग्लाइकोजन और वसा ऊतक कम होते हैं इसीलिए बछड़े में तापमान कम होने का खतरा बना रहता है। तापमान गिरने से बचाने के लिए जन्म के तुरंत बाद बछड़े को शरीर को सुखाएँ। जन्म स्थान का तापमान ना अधिक गर्म ना ही ठंडा हो। बछड़े को तुंरत माँ का दूध पिलाएँ।